International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0974-2832, (Print), E- ISSN- 2320-5474, Aug-Oct, 2013 ( Combind ) VOL –V * ISSUE – 55-57

शोध पत्र– हिन्दी

# गिरिराज किशोर और उनका साहित्य एक विवेचनात्मक विश्लेषण

* डॉ. अमित शक्ल

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय, रीवा ( म.प्र. )

Aug- Oct ,2013

गिरिराज किशोर का सृजनात्मक कृतित्व बहुआयामी रहा है। उन्होंने काव्य को छोड़कर साहित्य की अन्य सभी विधाओं में सृजन कर अपनी अद्भुत एवं बहुआयामी प्रतिभा का परिचय दिया है। हिन्दी साहित्य जगत में गिरिराज किशोर कहानीकार, नाटककार, निबंधकार, आलोचक एवं विचारक के रूप में जाने जाते हैं। सामंती जीवन परिवेश में उनका साहित्यिक रचनात्मक व्यक्तित्व का विकास हुआ है। अपने लेखन का प्रारंभ कहानी से करने वाले गिरिराज जी की प्रारंभिक कहानियाँ सैनिक, दैनिक हिन्दुस्तान, कड़ियाँ, धर्मयुग आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।[1] उनका स्वयं का यह कथन है कि सबसे पहले मेरी कहानियाँ मुजफ्फरनगर की कॉलेज पत्रिका में छपीं।

उसके बाद एक कहानी सन् 1960 में दीपावली के अवसर पर आगरा के सैनिक अखबार में छपी थीं। सन् 1961–62 में मेरी कुछ कहानियाँ दैनिक हिन्दुस्तान की रविवारीय पत्रिका में छपी। जिसके संपादक गोपाल प्रसाद व्यास रहे। उसी जमाने में एक कहानी कड़ियाँ मध्यप्रदेश में छपी थी, तब मैं इलाहाबाद में था। रमेश बक्शी ने ज्ञानोदय में मेरी कहानियाँ छापी। कल्पना में छपी अनेक छोटी पत्रिकाओं में छपी मैं इस बात से खुश हूँ कि मेरी कहानियों ने खुद रास्ता बनाया।[2] गिरिराज जी का समकालीन कहानी के विकास में विशेष योगदान रहा, उन्होंने 1959 से कहानी की शुरुआत की जो 150 के लगभग कहानियाँ लिखी हैं। जो विभिन्न कथा संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं। उनकी कहानियों में वस्तु–विधान की दृष्टि से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नौकरशाही, आधुनिकता बोध आदि समकालीन प्रवृत्तियों की चर्चा हुई है।[3] उनकी कहानियाँ मनुष्य के मन, अनुभव, संघर्ष, उपेक्षा, मान–अपमान, राजनैतिक विरोधाभाषों, मानवीय रिश्तों, भूख, तृप्ति, सैक्स कुंठाओं की परतों को खोलने का सशक्त माध्यम है।

गिरीराज जी की कहानियों में नीम के फूल, चार मोती, हम प्यार, कर लें, वल्द रोजी, यह देह किसकी है, शहर दर शहर, रिश्ता और अन्य कहानियाँ, पेपरवेट, गाना बड़े गुलामअली खाँ का, आन्द्रे की प्रेमिका तथा अन्य कहानियाँ, सम्पूर्ण कहानियाँ, लहू पुकारेगा, मेरी राजनैतिक कहानियाँ उपर्युक्त कहानी संग्रहों के अतिरिक्त हंस, साहित्य, अमृत, वागर्थ, कथा देश, आजकल जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं में भी उनकी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। कहानियों के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास लेखन में अपनी लेखनी चलाई उपन्यास क्षेत्र के वे जाने माने चर्चित हस्ताक्षर हैं।[4] सन् 1966 से अपनी उपन्यास लेखन यात्रा का आरंभ करने वाले गिरिराज किशोर के अब तक कुल 15 के लगभग उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने प्रथम उपन्यास ''लोग'' से शुरुआत की जो सन् 1966 में प्रकाशित हुआ है, यह काल व समय की दृष्टि से द्वितीय महायुद्ध के बाद आजादी के पूर्व तक के तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक भारतीय पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है। उसके बाद आये उपन्यासों में चिड़िया घर, यात्राएँ, जुगलबंदी, इन्द्र सुने, तीसरी सत्ता, दावेदार, परिशिष्ट, असलाह, अन्तर्ध्वस, ढाई घर, यातना घर, पहला गिरमिटिया, अष्टाचक्र आदि उपन्यास लिखे।[5] पर उपर्युक्त उपन्यासों में से उनका सबसे चर्चित उपन्यास पहला गिरमिटिया रहा यह भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली से सन् 1999 में प्रकाशित बहुचर्चित उपन्यासों में से एक है। इसके लेखन में उन्होंने साउथ अफ्रीका, मारीशस, आदि देशों की यात्राएँ की। इस उपन्यास को लिखने में उन्हें आठ वर्ष का समय लगा।

सन् 2000 में इसे व्यास सम्मान से पुरस्कष्त किया गया है। गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीका के जीवन वृत्त सन् 1893–1914 को कथावस्तु के केन्द्र में रखा गया है। इस उपन्यास में वृहद कथा है, इसमें गाँधी जी के विचारों या जीवन से प्रभावित या अप्रभावित लोगों के लिए ही नहीं बल्कि इस वृहद जनसमुदाय के लिए गिरिराज किशोर ने लिखी है जो अन्याय शोषण, और हिंसा के विरुद्ध अपना सत्याग्रह अनवरत जारी रखता है। स्थितियाँ कैसी भी हों उपनिवेशवाद, उत्तर उपनिवेशवाद, आंतरिक उपनिवेशवाद, नव साम्राज्यवाद, नाभिकीय संकट 21वीं शदी के दहलीज पर खड़े भारत के और विश्व के भी संघर्षरत जन को महात्मा गाँधी से अधिक मोहनदास की आवश्यकता है–जो कि ऐतिहासिक दस्तावेजों में लगभग अदृश्य है। गिरिराज किशोर ने अपनी कथा में मोहन को इतिहास से लौटा लिया है पुनः प्राप्त किया है–क्योंकि अपनी सारी कमियों के साथ मोहन अमानवीय तत्व के विरुद्ध संघर्षरत है।

ऐसा एक मोहन हम सभी में कहीं छुपा होता है। यही सार्थकता है, पहला गिरमिट्या की। गिरिराज किशोर उपन्यासकार, कहानीकार, तथा विचारक के साथ यशस्वी नाटककार भी हैं। उन्होंने चार एकांकी व सात नाटकों की रचना की। अनेक नाटकों का सफल मंचन भी हुआ है। उनके नाटकों का सफल निर्देशन बंसी कोल, बी.एम. शाह, उर्मिला कुमार जैसे यशस्वी निर्देशकों द्वारा किया गया है। उनकी नाट्ककृतियाँ हैं– नरमेघ यह सन् 1979 में नटरंग द्वारा प्रकाशित हुई है। उनका दूसरा नाटक प्रजा ही रहने दो यह 1977 में नेशनल पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली

द्वारा प्रकाशित हुआ है। इसका द्वितीय संस्करण 1978 में आया। उनका तीसरा नाटक, घास और घोड़ा यह सन् 1980 में सरस्वती बिहार शहदरा दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसकी सफल प्रस्तुति आगरा की एक संस्था है। इनका चौथा नाटक चेहरे–चेहरे किसके लिए यह नाटक सन् 1983 में लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ है। इसे उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान द्वारा भारतेन्दु सम्मान दिया जा चुका है। उनका पाँचवा नाटक केवल मेरा नाम लो यह सन् 1984 में साहित्य सदन कानपुर से प्रकाशित हुआ है। यह नाटक मनोवैज्ञानिक जगत को बाखूबी अभिव्यक्त करता है।[7]

गिरिराज किशोर जी की जुर्म आयद नामक नाट्यकृति यह सन् 1987 में नेशनल पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली से प्रकाशित की गई है। यह वर्तमान न्यायपालिका की व्यवस्था के संदर्भ को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करता है। उनका सातवां नाटक काठ की तोप सन् 1969 में नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली से प्रकाशित हुआ। नाटकों के साथ उनका एकांकी संग्रह का भी प्रकाशन बादशाह गुलाम बेगम यह संकलन 1979 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल चार एंकाकी नाटक है। वे हैं बादशाह गुलाम बेगम, हम रोशनी, बाँटते हैं दिन रुक गया और कोल्डडस्ट, बादशाह गुलाम बेगम प्रस्तुत संकलन का मुख्य एकांकी है। जो राजनीति और सत्ता को आधार बनाकर चलता है। देश की वर्तमान स्थिति और जनता की दशा की अभिव्यक्ति करना रचना का उद्देश्य है।[8] गिरिराज किशोर जी ने समस्त नाट्य कृतियों के संचयन के रूप में 'रंगार्पण' निकाला। यह संचयन सन् 2000 में प्रकाशित हुआ है। इसमें सात नाटकों का संकलन है। उपर्युक्त सष्जनात्मक कृतित्व के अतिक्ति गिरिराज किशोर निबंध, आलोचक, व बाल साहित्य के रूप में अपनी लेखनी चलाई तथा अनेक साहित्यिक गतिविधियों में अपनी सहभागिता दर्ज कराकर हिन्दी साहित्य के लिए विशिष्ट योगदान दिया।[9] उन्होंने संपादन का कार्य भी किया है। उनके संस्मरण, आत्मपरक लेख वैचारिक लेख, निबंध, आलोचनात्मक लेख, साहित्यिक लेख जो कि नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, इण्डिया टुडे, राष्ट्रीय सहारा स्वतंत्र भारत, रविवार, परिवर्तन, आजकल, हंस, वागर्थ, सबरंग, कथादेश, समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अमृत में प्रकाशित हुए। उनके चर्चित निबंधों में संवाद हेतु, लिखने का तर्क कथ–अकथ, सरोकार, एक जनसभा की त्रासदी, सप्तपर्णी यह संस्करण एवं डायरी के रूप में है। बच्चों के निराला, सोने की गुड़िया, पके सोने।[10]

निष्कर्ष यह है कि हिन्दी साहित्य के विशिश्ट अवदान में गिरिराज किशोर का नाम महत्वपूर्ण है। उनकी सृजनात्मक कृतित्व के विवेचनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गिरिराज किशोर जी ने अपने उत्कृष्ट लेखने के माध्यम से काव्य को छोड़कर, साहित्य की प्रत्येक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई चाहे वो निबन्ध, कहानी, नाटक, एंकाकी, उपन्यास, बाल साहित्य, या संपादन का कार्य हो। देखा जाए तो उन पर गाँधी दर्शन का प्रभाव होने के कारण गाँधी पर कुछ लिखने की सोच उनमें विकसित हुई जिसकी झलक उनका बहुचर्चित उपन्यास पहला गिरमिट्या तथा यातना घर में दृष्टिगति होती है। यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी के प्रमुख साहित्यकारों में उनका साहित्यिक योगदान युगों–युगों तक स्मरण किया जाएगा।[11]

## संदर्भ ग्रंथ


1- दुबे पुरुषोत्तम–चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास नेशनल पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली सन् 2000 पृष्ठ 370, 375
2. मोहनी मणिका, संपादक, वैचारिकी प्रवेशांक 15 अगस्त, 1976, गिरिराज किशोर का लेख, रचनाकर्म और आत्म संबोधित करने का घेरा, पृष्ठ 44
3. लाल लक्ष्मीनारायण–हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, साहित्य भवन इलाहाबाद 2001 पृष्ठ 229,235
4. दिवाकर महेश–हिन्दी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, लोक भारती इलाहाबाद 2002 पृष्ठ 131, 134
5. राय राजकमल–संस्करण, गिरिराज किशोर, एक चरित्रवान संकल्प से उद्धृत पृष्ठ 02,04
6. किशोर गिरिराज– सम्पूर्ण कहानियाँ, खंड–3, फ्लैप से
7. रानी–संपादक, समकालीन भारतीय साहित्य, जुलाई–सितंबर 1986 उपन्यास के संदर्भ में जानकी प्रसाद का लेख पृष्ठ 101
8. लाल लक्ष्मी नारायण, हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, गणेश प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1999, पृष्ठ 231–235
9. नरवाडे कुमार संजीव–गिरिराज की कहानियों में समकालीन प्रवृत्ति, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ 21–37
10. वत्स जितेन्द्र, साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनैतिक चेतना, साहित्य भवन इलाहाबाद, 2001, पृष्ठ 105–112
11. स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष